Postal Regd. No. :
HP/115/SML/2020-22
< Postage Prepaid >

www.bakhabarconnect.com

शिमला | मंगलवार | 12 - 18 अक्तूबर 2022

• वर्ष 9 • अंक 8 • पृष्ठ 4 • साप्ताहिक • मूल्य 1/-
आर.एन.आई. नं. एचपीएमयूएल / 2014/58822

] विचार »

अत्याचार और भय परस्पर हाथ मिलाते हैं।
- बाल्जक

बाख़बर कनेक्ट

@bakhabarconnect

कार्रवाई, सरगोशी से शाया होने तक

इन परिस्थितियों में ही आगे बढ़िये
2

राज्यपाल ने नौणी विश्वविद्यालय में 'स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय नायकों का योगदान' विषय पर आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता की

निशा देवी
शिमला . बाख़बर कनेक्ट

राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग, नई दिल्ली, अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम और डॉ. यशवंत सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी, सोलन में 'स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय नायकों की भूमिका' विषय पर आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि हमें आजादी का अमृत महोत्सव में अपने जनजातीय नायकों के योगदान को याद रखने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि जनजातीय वीरों ने न केवल सत्याग्रह किया, बल्कि राष्ट्र के लिए अपने प्राणों की आहुति भी दी। राज्यपाल ने कहा कि जनजातीय नायकों ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। उन्होंने कहा कि असंख्य जनजातीय नायकों का चरित्र हमारे लिए आदर्श है और उन्हें सदैव याद रखने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि अमृत काल के दौरान हमें किस दिशा में जाना है, यह तय करने के लिए ऐसे नायकों के बारे में जानना जरूरी है और हर व्यक्ति खास कर युवा पीढ़ी को इस दिशा में काम करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि देश का भविष्य युवाओं पर निर्भर करता है, इसलिए उनके लिए वीरों के बलिदानों को याद रखना बहुत जरूरी है और उनसे सीखने की जरुरत है। राज्यपाल ने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान हमें कई गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष और बलिदान को जानने का मौका मिला है। उन्होंने कहा कि युवाओं को हमारे देश के इतिहास और स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में जानना बहुत जरूरी है। आजादी का अमृत महोत्सव उन महान स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को याद करने का एक सुनहरा अवसर है जिन्होंने देश के गौरव के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

वोट देना न सिर्फ व्यक्ति का कर्तव्य बल्कि अधिकार भी : डॉ. पूनम

देवेन्द्र कश्यप
शिमला . बाख़बर कनेक्ट

निर्वाचन अधिकारी एवं रिटर्निंग अधिकारी 62- कसुम्पटी विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र डॉ पूनम ने जानकारी देते हुए बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के दिशानिर्देशों के तहत निर्वाचक प्रक्रिया में लोगों की सहभागिता बढ़ाने के उद्देश्य से 62- कसुम्पटी निर्वाचन क्षेत्र में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम के तहत राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला व्योलिया एवं मैहली में सुव्यवस्थित मतदाता शिक्षा एवं निर्वाचक सहभागिता (स्वीप) के नोडल अधिकारी दिलीप वर्मा ने अध्यापकों एवं विद्यार्थियों को

शेष पृष्ठ दो पर

पहली मर्तबा 80 वर्ष की आयु से अधिक के मतदाता पोस्टल बैलेट पेपर से भी मतदान कर सकेंगे : डॉ. पूनम

शिमला : भारत निर्वाचन आयोग के दिशानिर्देशों अनुसार निर्वाचन प्रक्रिया में लोगों की सहभागिता बढ़ाने के उद्देश्य से कसुम्पटी निर्वाचन क्षेत्र के अंतर्गत राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भट्टाकुफर में स्वीप गतिविधियों पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता रिटर्निंग अधिकारी एवं सहायक आयुक्त जिला शिमला डॉ. पूनम ने की। उन्होंने अपने संबोधन कहा कि भारत निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देशानुसार इस वर्ष पहली मर्तबा 80 वर्ष की आयु से अधिक वाले लोग एवं दिव्यांगजन पोस्टल बैलेट पेपर के माध्यम से भी अपने मत का प्रयोग कर सकते है जिसके लिए वह बीएलओ के माध्यम से 12 डी फॉर्म भर कर जमा करना होंगा।

अमित शाह का बेसब्री से इंतजार कर रहे 3 लाख हाटी : बलदेव तोमर

अजय कश्यप
पावंटा . बाख़बर कनेक्ट

देश के गृह मंत्री और भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह के शानदार भव्य स्वागत की तैयारी में गिरीपार लग चुका है। यह अवसर संपूर्ण गिरीपार के लिए भावनात्मक और इंतजार से भरा है। वर्ष 1967 से यह गिरिपार का सबसे बड़ा सामाजिक मुद्दा रहा है। हमारे पड़ोसी क्षेत्र जौनसार बावर को 1967 में जनजातीय क्षेत्र का दर्जा प्राप्त हुआ लेकिन कांग्रेस की हाटी विरोधी मानसिकता के कारण हमारा यह मुद्दा 55 वर्ष संघर्ष करता रहा। बलदेव तोमर ने कहा कि डबल इंजन की सरकार ने यह गिरीपार को आज़ादी के बाद का सबसे बड़ा तोहफ़ा प्रदान किया है, 3 लाख 15 हजार लोगों के दर्द को केवल देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी और गृह मंत्री अमित शाह, प्रदेश के ईमानदार मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर के ईमानदार प्रयासों के कारण यह मुद्दा सिरे चढ़ा है। तोमर ने कहा कि इस के लिए गिरीपार की समस्त जनता की तरफ से वह केंद्र और प्रदेश नेतृत्व का आभार वयक्त करते है। तोमर ने कहा कि गिरिपार का हर युवा, बुजुर्ग, माता, बहन और बेटियां आज पलके बिछा के अमित शाह का इंतजार कर रहे है विकास की दृष्टि से जनजातीय क्षेत्र होने से हमारे क्षेत्र में अनेक प्रकार के बदलाव तय है।

कांगड़ा जिला में 1625 पोलिंग बूथ होंगे स्थापित : डीसी

ललित कश्यप
धर्मशाला . बाख़बर कनेक्ट

विधानसभा चुनाव-2022 में कांगड़ा जिला के 15 विधानसभा क्षेत्रों में 1625 पोलिंग बूथ स्थापित किए जाएंगे जिसमें 291 अतिसंवेदनशील तथा 158 क्रिटिकल पोलिंग स्टेशन हैं। यह जानकारी उपायुक्त डा निपुण जिंदल ने शनिवार को उपायुक्त कार्यालय परिसर के सभागार में पत्रकार वार्ता ने देते हुए कहा कि जिला में कुल मतदाताओं की संख्या 1328516 है जिसमें पुरूष मतदाता छह लाख 78 हजार 28, महिला मतदाता छह लाख 50 हजार 488 मतदाता हैं। 18-19 वर्ष आयु वर्ग के नए मतदाताओं की संख्या 34926 है जबकि दिव्यांग मतदाताओं की संख्या 10692 है। अस्सी वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ मतदाताओं की संख्या 35,575 है। उन्होंने बताया कि धर्मशाला के सिद्धबाड़ी पोलिंग स्टेशन में सबसे अधिक 1475 मतदाता हैं। उन्होंने कहा कि विधानसभा निर्वाचन-2022 प्रक्रिया निष्पक्ष तथा शांतिपूर्वक तरीके से संपन्न करवाने के लिए नोडल अधिकारी भी तैनात किए गए हैं जिसमें कानून व्यवस्था के लिए एसपी कांगड़ा तथा एसपी नुरपुर, स्वीप के लिए एडीसी, ईवीएम प्रबंधन के लिए एडीएम, आदर्श आचार संहिता एमसीसी के लिए एडीएम, परिवहन के लिए डीएम एचआरटीसी, दिव्यांगजनों के लिए जिला कल्याण अधिकारी को नोडल आफिसर तैनात किया गया है। उन्होंने कहा कि कांगड़ा जिला में विभिन्न स्तरों पर जांच के लिए 90 के करीब उड़नदस्ते तथा स्टैटिक सर्विलेंस टीम्स गठित की गई।

उपायुक्त डा निपुण जिंदल ने कहा कि सभी विधानसभा क्षेत्रों में स्ट्रांग रूम तथा मतगणना केंद्रों की उचित व्यवस्था की गई है। उपायुक्त डा निपुण जिंदल ने कहा कि कांगड़ा जिला में राजनीतिक दलों तथा प्रत्याशियों की व्यय निगरानी के लिए ई-कैच कांगड़ा एडमिनिस्ट्रेटिव ट्रैकिंग चुनाव ऐप तैयार किया गया है।

अर्की महाविद्यालय में स्वीप कार्यक्रम के तहत कवि सम्मेलन आयोजित

देवेन्द्र कश्यप
अर्की . बाख़बर कनेक्ट

अर्की महाविद्यालय में स्वीप कार्यक्रम के तहत कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उमण्डल निर्वाचन अधिकारी अर्की केशव राम ने अर्की महाविद्यालय में बतौर मुख्यातिथि शिरकत की।

केशव राम ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस कवि सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य नए मतदाताओं को मतदान के प्रति जागरूक करने के साथ-साथ लोकतंत्र के बारे में जागरूक करना है।

उन्होंने कहा कि जो युवा 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके है वे अपने मत का प्रयोग करें। उन्होंने कहा कि मतदान एक महादान है।

उन्होंने 18 वर्ष की आयु व इससे अधिक आयु वर्ग के सभी मतदाताओं को विधानसभा चुनाव, 2022 में बढ़-चढ़ कर भाग लेने का आग्रह किया।

इस अवसर पर युवा कवियों व वरिष्ठ साहित्यकारों ने अपने रचनाओं के माध्यम से लोगों को मतदान के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया। राष्ट्रपति अवार्ड से सम्मानित साहित्यकार हेम राज कौशिक व महाविद्यालय के प्राचार्य जगदीश शर्मा विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

. बाख़बर कनेक्ट .

[सम्पादकीय]

मुक्त बाजार और उपभोक्ता संरक्षण के बीच संतुलन की दरकार

उपभोक्ता मामलों में आजकल उपभोक्ता कल्याण के सभी पहलू शामिल हैं और इसे हाल में अंतरराष्ट्रीय पहचान भी मिली है। उपभोक्ता सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक प्रणाली का अभिन्न हिस्सा समझा जाता है, जहां क्रेता और विक्रेता के बीच के किसी भी विनिमय एवं लेन-देन का तीसरे पक्ष यानि समाज पर गहरा असर पड़ता है। व्यापक उत्पादन एवं बिक्री में सन्निहित फायदे की मंशा कई विनिर्माताओं एवं डीलरों को उपभोक्ताओं का शोषण करने का अवसर प्रदान करती है। बाजारों का वैश्वीकरण हो रहा है। उपभोक्ताओं पर उत्पादों के ढेरों विकल्प लादे जा रहे हैं, ऐसे में, कौन-सा उत्पाद खरीदा जाए इस संबंध में निर्णय लेना कठिन होता जा रहा है।

इंटरनेट, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड और एटीएम जैसी नई प्रौद्योगिकियां एक तरफ उपभोक्ता का जीवन आसान बना रही हैं तो दूसरी तरफ वे सुरक्षा और संरक्षण संबंधी चुनौतियां भी खड़ी कर रही हैं। उपभोक्ता के रूप में हमें सही सामान का चुनाव करना है। खरीददारी के दौरान ठगे जाने और मेहनत की गाढ़ी कमाई अदा कर घटिया उत्पाद या सेवा मिलने का डर व जोखिम भी बना रहता है। अतैव, उपभोक्ता की संतुष्टि और सुरक्षा की आवश्यकता को पहचान दी गयी। इसके अलावा, वित्तीय जोखिम भी हैं। उपभोक्ताओं को व्यय की गई राशि का मूल्य नहीं मिल पाता या उनसे ज्यादा पैसे ऐंठ लिये जाते हैं, जिससे वे शोषण के शिकार हो जाते हैं। बीमा पॉलिसी के दावे के निबटान में अनावश्यक देरी, अधिक बिल आने, ऋण के दोगुना होने, बिल आने में देरी, पेंशन में देरी, गलत बिलों में सुधार न होना, भ्रामक विज्ञापन, ऑफर में आनाकानी, फ्लैट का मालिकाना हक दिये जाने में देरी, चेक को गलत तरीके से अमान्य करना, बैंक में जमा किये गये चेक का गायब होना, फर्जी हस्ताक्षर वाले चेक, आदि जैसे इसके ढेरों उदाहरण हैं।

किसी भी व्यक्ति को विज्ञापनों के बहकावे में नहीं आना चाहिए जो उपभोक्ताओं के सूचना अधिकारों का उल्लंघन करते हैं और उन्हें वित्तीय हानि और मानसिक दुख पहुंचा सकते हैं। इसलिए रकम को दुगुना करें जैसे प्रलोभनों वाले विज्ञापनों से हमेशा सावधान रहें। इसलिए मुक्त बाजार की ताकतों और उपभोक्ता संरक्षण के बीच संतुलन बनाना चाहिए। कोई भी उपभोक्ता आंदोलन तभी सफल हो सकता है, जब उपभोक्ता संतुष्ट हों। उपभोक्ता तभी संतुष्ट होते हैं जब वे अपने उत्पादों और सेवाओं का मूल्य प्राप्त करते हैं। इस प्रकार सरकार, न्यायपालिका, व्यापारियों और उपभोक्ताओं के बीच सहक्रिया और सहयोग का होना आवश्यक है।

॥ प्रथम पृष्ठ के शेष >

वोट देना . . .

सम्बोधित करते हुए कहा कि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश हैं। यहां मतदान द्वारा ही सरकार चुनी जाती है। वोट देना न सिर्फ व्यक्ति का कर्तव्य है बल्कि अधिकार भी है।

उन्होंने कहा कि प्रत्येक नागरिक को अपने मत देने के अधिकार को समझना चाहिए। मतदाता लोकतंत्र की रीढ़ होते हैं, मत का प्रयोग समझदारी से किया जाना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि जो अपने मताधिकार का उपयोग करने नहीं जा रहे उन्हें जागरूक करने की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि मतदाता को मत प्रयोग की ताकत को जानना चाहिए और आनेवाले समय में मतदाता निर्भीक होकर बिना लालच के मत का प्रयोग करें। स्वीप कार्यक्रम के अधीन दो मुख्य घटकों ब्लू नेल पॉलिश अभियान व बालतंत्र अभियान की जानकारी भी दी। बालतंत्र की जानकारी देते हुये कहा कि उन्हे शपथ लेनी है कि वे मतदान के दिन अपने घर के सभी बर्जुगों, युवाओं और महिलाओं को चुनाव में बढ़-चढ़ भाग लेने के लिय प्रेरित करेगें। इस मौके पर सभी को मतदान देने की शपथ दिलाई गई व राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला व्योलिया की प्रधानाचार्या निशा भलूनी व मैहली की कार्यवाहक प्रधानाचार्य डॉ आशा ठाकुर ने महिला प्राध्यापकों व अध्यापिकाओं को ब्लू नेल पेंट लगाया जो वोट के प्रति जागरूकता का संदेश है।

इस अवसर पर कसुम्पटी निर्वाचन क्षेत्र के सुव्यवस्थित मतदाता शिक्षा एवं निर्वाचक सहभागिता (स्वीप) के दुसरे नोडल अधिकारी हेमंत वर्मा ने विद्यार्थियों को मतदान के महत्व की विस्तार से जानकारी दी तथा प्रजातंत्र के मूल्यों को विकसित करने की जरूरतों पर प्रकाश डाला।

आनन्दमय जीवन बिताने के लिए धन विद्या, अच्छा सहयोग, स्वास्थ्य आदि की आवश्यकता है परन्तु ऐसा न समझना चाहिए कि इन वस्तुओं के होने से ही जीवन आनन्दमय बन सकता है। एक अच्छी पुस्तक लिखने के लिए कागज दवात कलम की आवश्यकता है परन्तु इन तीनों के इकट्ठे हो जाने से ही पुस्तक तैयार नहीं हो सकती। मान लेखक ही उत्तम पुस्तक के निर्माण में प्रमुख है। दवात कलम कागज तो एक गौण और छोटी वस्तु हैं। जिसे पुस्तक लिखने की योग्यता है उसका काम रुका न रहेगा, इन वस्तुओं को वह बहुत ही आसानी से इकट्ठी कर लेगा। आज तक एक भी घटना किसी ने ऐसी न सुनी होगी कि अमुक लेखक इसलिए रचनाएं न कर सका कि उसकी दवात में स्याही न थी। अगर कोई लेखक यों कहे कि क्या करूं साहब मेरे पास कलम ही न थी, यदि कलम होती तो बहुत बढ़िया ग्रन्थ लिख देता।

इन परिस्थितियों में ही आगे बढ़िये

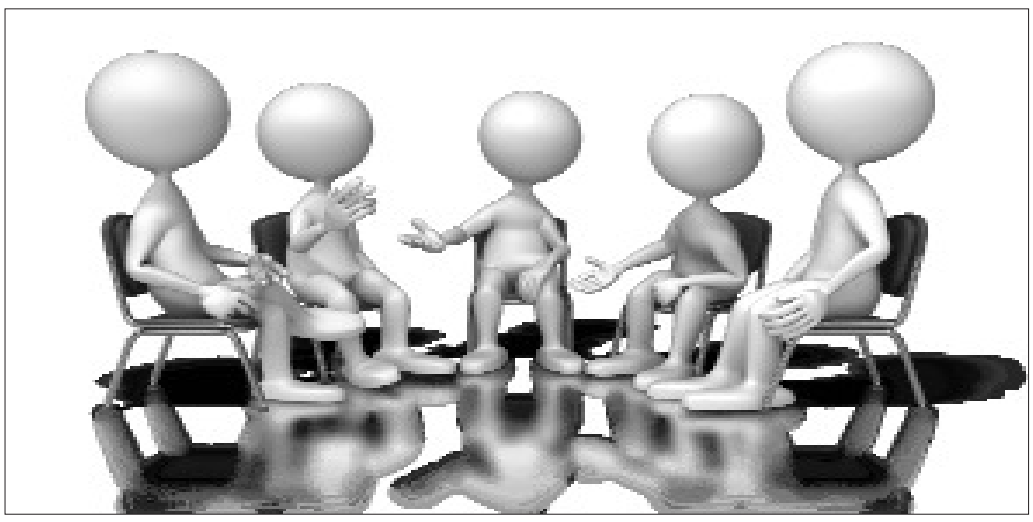

'अगर मुझे अमुक सुविधायें मिलती तो मैं ऐसा करता' इस प्रकार की बातें करने वाले एक झूठी प्रवंचना किया करते हैं। अपनी नालायकी को भाग्य के ऊपर ईश्वर के ऊपर, थोप कर खुद निर्दोष बनना चाहते हैं। यह एक असंभव माँग है कि मुझे अमुक परिस्थिति मिलती तो ऐसा करता, जैसी परिस्थिति की कल्पना की जा रही है यदि वैसी मिला जाय तो वे भी अपूर्ण मालूम पड़ेगी और फिर उससे अच्छी स्थिति का अभाव प्रतीत होगा। जिन लोगों के पास धन, विद्या, मित्र, पद आदि पर्याप्त मात्रा में मिले हुए हैं हम देखते हैं कि उनमें से भी अनेकों का जीवन बहुत अस्त-व्यस्त और असंतोष जनक स्थिति में पड़ा हुआ है। धन आदि का होना उनके आनन्द की वृद्धि न कर सका वरन् जी का जंजाल बन गया। जो सर्प विद्या नहीं जानता, उसके पास बहुत साँप होना भी खतरनाक है। जिसे जीवन कला का ज्ञान नहीं, उसे गरीबी में अभावग्रस्त अवस्था में थोड़ा बहुत आनन्द जब भी है, यदि वह सम्पन्न होता तो उन सम्पत्तियों का दुरुपयोग करके अपने को और भी अधिक विपत्ति ग्रस्त बना लेता।

यदि आपके पास आज मनचाही वस्तुएं नहीं हैं तो निराश होने की कुछ आवश्यकता नहीं हैं। टूटी-फूटी चीजें हैं उन्हीं की सहायता से अपनी कला को प्रदर्शित करना आरम्भ कर दीजिए। जब चारों ओर घोर घना अंधकार छाया हुआ होता है तो वह दीपक जिसमें छदाम का दिया, आधे पैसे का तेल और दमड़ी की बत्ती है- कुल मिलाकर एक पैसे की भी पूँजी नहीं है- चमकता है और अपने प्रकाश से लोगों के रुके हुए कामों को चालू कर देता है। जब कि हजारों पैसे के मूल्य वाली वस्तुएं चुपचाप पड़ी होती हैं।

यह एक पैसे की पूँजी वाला दीपक प्रकाशवान होता है, अपनी महत्ता प्रकट करता है, लोगों का प्यारा बनता है, प्रशंसित होता है और अपने अस्तित्व को धन्य बनाता है। क्या दीपक ने कभी ऐसा रोना रोया कि मेरे पास इतने मन तेल होता, इतनी रुई होती, इतना बड़ा मेरा आकार होता तो ऐसा बड़ा प्रकाश करता? दीपक को कर्महीन नालायकों की भाँति बेकार शेखचिल्लियों के से मनसूबे बाँधने की फुरसत नहीं है, वह अपनी आज की परिस्थिति हैसियत, औकात को देखता है उसका आदर करता है और अपनी केवल मात्रा एक पैसे की पूँजी से कार्य आरम्भ कर देता है। उसका कार्य छोटा है बेशक, पर उस छोटेपन में भी सफलता का उतना ही अंश है जितना कि सूर्य और चन्द्र के चमकने की सफलता है। यदि आन्तरिक संतोष धर्म और परोपकार की दृष्टि से तुलना की जाय तो अपनी-अपनी मर्यादा के अनुसार दोनों का ही कार्य एक सा है। दोनों का ही महत्व समान है, दोनों की सफलता एक सी है।

सच बात तो यह है कि अभाव ग्रस्त कठिनाईयों में पले हुए, साधन हीन व्यक्ति ही भविष्य के नेता महात्मा, महापुरुष, सफल जीवन मुक्ति पथगामी हुए हैं। कारण यह है कि विपरीत परिस्थितियों से टकराने पर मनुष्य की अन्त: प्रतिभा जागृत होती है। सुप्त शक्तियों का विकास होता है। पत्थर पर रगड़ खाने वाला चाकू तेज होता है और वह अपने काम में अधिक कारगर साबित होता है। उस का स्वभाव, अनुभव और दिमाग मंज कर साफ हो जाता है, जिससे आगे बढ़ने में उसे बहुत सफलता मिलती है। इसके विपरीत जो लोग अमीर और साधन सम्पन्न घरों में पैदा होते हैं, उन्हें जीवन की आवश्यक सामग्रियाँ प्राप्त करने के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ता, लाड़ दुलार ऐश आराम के कारण उनकी प्रतिभा निखरती नहीं वरन् बंद पानी की तरह सड़ जाती है या निष्क्रिय चाकू की तरह जंग लगकर निकम्मी हो जाती है। आमतौर पर आजकल ऐसा देखा जाता है कि अमीरों के लड़के अपने जीवन में असफल रहते हैं और गरीबों के लड़के आगे चलकर चमक जाते हैं। पुराने जमाने में राजा रईस लोग अपने लड़कों को ऋषियों के आश्रम में इसलिए भेज देते थे कि वहाँ रहकर अभावग्रस्त जीवन व्यतीत करे और अपनी प्रतिभा को तीव्र बनावे।

हमारा उद्देश्य यह कहने का नहीं है कि अमीरी कोई बुरी चीज है और अमीरों के घर में पैदा होने वाले उन्नत जीवन नहीं बिता सकते। जहाँ साधन हैं वहाँ तो और भी जल्दी उन्नति होनी चाहिए। बढ़ई के पास बढ़िया लकड़ी और अच्छे औजार हों तब तो वह बहुत ही सुन्दर फर्नीचर तैयार करेगा यह तो निश्चित है हमारा तात्पर्य केवल यह कहने का है कि यदि जिन्दगी जीने की कला आती हो तो अभाव, कठिनाई या विपरीत परिस्थिति भी कुछ बाधा नहीं डाल सकती, गरीबी या कठिनाई में साधनों की कमी का दोष है तो प्रतिभा को चमकाने का गुण भी है। अमीरी में साधनों की बाहुल्यता है तो लाड़ दुलार और ऐश आराम के कारण प्रतिभा के खराब हो जाने का दोष भी है। दोनों ही गुण दोष युक्त हैं किन्तु जो जीवन जीना जानता है वह चाहे अमीर हो या गरीब अच्छी परिस्थितियों में है या कठिनाइयों में पड़ा हो, कुछ भी क्यों न हो हर एक स्थिति में अनुकूलता पैदा कर सकता है, हर अवस्था में उन्नति सफलता और आनन्द प्राप्त कर सकता है।

आनन्दमय जीवन बिताने के लिए धन विद्या, अच्छा सहयोग, स्वास्थ्य आदि की आवश्यकता है परन्तु ऐसा न समझना चाहिए कि इन वस्तुओं के होने से ही जीवन आनन्दमय बन सकता है। एक अच्छी पुस्तक लिखने के लिए कागज दवात कलम की आवश्यकता है परन्तु इन तीनों के इकट्ठे हो जाने से ही पुस्तक तैयार नहीं हो सकती। मान लेखक ही उत्तम पुस्तक के निर्माण में प्रमुख है। दवात कलम कागज तो एक गौण और छोटी वस्तु हैं। जिसे पुस्तक लिखने की योग्यता है उसका काम रुका न रहेगा, इन वस्तुओं को वह बहुत ही आसानी से इकट्ठी कर लेगा।

आज तक एक भी घटना किसी ने ऐसी न सुनी होगी कि अमुक लेखक इसलिए रचनाएं न कर सका कि उसकी दवात में स्याही न थी। अगर कोई लेखक यों कहे कि क्या करूं साहब मेरे पास कलम ही न थी, यदि कलम होती तो बहुत बढ़िया ग्रन्थ लिख देता। तो उसकी इस बात पर कोई विश्वास न करेगा। भला कलम भी कोई ऐसी दुष्प्राप्य वस्तु है जिसे लेखक प्राप्त न कर सके। एक कहावत है कि 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा।' जिसे नाचना नहीं आता वह अपनी अयोग्यता को यह कह कर छिपाता है कि क्या करूं आँगन टेढ़ा है।

टेढ़ा ही सही, जिसे नाचना आता है उसके लिए टेढ़ेपन के कारण कुछ विशेष अड़चन पड़ने की कोई बात नहीं है। इसी प्रकार जो जीवन की विद्या जानता है, उसे साधनों का अभाव और विपरीत परिस्थितियों की शिकायत करने की कोई बात नहीं है। साधनों की आवश्यकता है बेशक, परन्तु इतनी नहीं कि उनके बिना प्रगति ही न हो सके।

चतुर पुरुष विपरीतता में अनुकूलता पैदा कर सकता है। विष को अमृत बना लेते हैं। सखिया, धतूरा, पारा, सींगिया, हरताल आदि प्राणघातक विषों से लोग रोगनाशक, आयुवर्धक रसायनें बनाते हैं। बालू में से चाँदी, कोयले में से हीरा निकालते हैं। सर्पों की विष थैली में से मणि प्राप्त करते हैं, धरती की शुष्क और कठोर तह को खोदकर शीतल जल निकालते हैं, गरजते समुद्र के पेट में घुसकर मोती लाते हैं।

दृष्टि पसार कर देखिए आपके चारों और ऐसे कलाकार बिखरे हुए दिखाई पड़ेंगे, जो तुच्छ चीजों की सहायता से बड़े महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। ऐसे वीर पुरुषों की कमी नहीं है जो वज्र जैसी निष्ठुर परिस्थिति में प्रवेश करके विजय लक्ष्मी का वरण करते हैं। यदि आपकी इच्छा शक्ति जरा वजनदार हो तो आप भी इन्हीं कलाकारों और वीर पुरुषों की श्रेणी में सम्मिलित हो कर अपनी आज की सारी विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल बना सकते हैं। अपनी सारी शिकायतें, चिंतां, विवशताएं आसानी के साथ संतोष, आशा और समर्थता में बदल सकते हैं।

والدین بچوں کے 'سکرین ٹائم' کو کیسے مفید بنا سکتے ہیں؟

جب میری نوازئیدہ بیٹی نے بولنا بھی شروع نہیں کیا تھا تب بھی اسے یہ معلوم تھا کہ کون سا موبائل میرا ہے اور کون سا اس کے والد کا۔ دونوں موبائل ایک جیسے دکھتے تھے لیکن اگر میرے علاوہ کوئی میرے فون کو ہاتھ بھی لگاتا تو وہ چیخ اٹھتی۔ اگر میں اپنا فون کسی اور کو تصویر دکھانے کی غرض سے بھی دیتی تو وہ شدید غصے میں آجاتی۔

اس کی چھوٹی سی دنیا میں میرا فون میرا اتنا ہی حصہ تھا جتنے میرے جوتے یا کپڑے کیونکہ فون ہمیشہ میرے پاس ہی رہتا تھا اور میری بیٹی میری چیزوں کے تحفظ کے معاملے میں خاصی حساس تھی۔ جب مجھے اس بات کا احساس ہوا تو میں نے سوچا کے واقعی اب یہ حقیقت ہے کہ سکرینز ہماری روزمرہ کی زندگیوں کا انتہائی اہم حصہ ہیں۔ حالانکہ میں موبائل کے استعمال میں کمی لانے کی بے انتہا کوشش کرتی ہوں تاہم اس کے فوائد بھی ہیں۔ یہ مجھے راستہ بتانے میں انتہائی مددگار ہے، اس کے ذریعے میں سوشل میڈیا دیکھ سکتی ہوں، آن لائن کھانا منگوا سکتی ہوں اور کتابوں کے آڈیو ورژن وغیرہ سن سکتی ہوں۔ کیونکہ میری بیٹی کے نانا نانی ہم سے دور رہتے ہیں تو ان سے موبائل کے ذریعے رابطہ قائم رکھا جا سکتا ہے اور یہ اب اس لیے بھی اہم ہو گیا ہے کیونکہ لاک ڈاؤن اور سفری پابندیوں کے باعث میں اپنی والدہ سے سنہ 2019 کے بعد سے نہیں ملی۔

ہماری سکرینز خاصی متاثر کن ہوتی ہیں اس لیے یہ ناگزیر ہے کہ ہمارے بچے ان کے بارے میں بہت جلدی، آسانی سے اور فطرتاً سیکھ لیتے ہیں۔ میرے بیٹے کو جیسے فطرتاً ہی یہ معلوم تھا کہ فون پر سوائپ کرنے سے روشنی جلتی ہے۔ ابھی وہ ایک سال کا بھی نہیں ہوا تھا لیکن اسے یہ بات معلوم تھی۔

ہمیں یہ بھی معلوم ہے کہ سکرینز کی آپ کو بہت جلد عادت بھی ہو جاتی ہے اور اس کے باعث بچوں کے ذہنوں میں ایسی تبدیلیاں آتی ہیں جن کے بارے میں ہم آہستہ آہستہ جان رہے ہیں۔ ایسا بھی نہیں ہے کہ اس کے اثرات صرف برے ہی ہیں لیکن یہ اچھے بھی نہیں ہیں۔ تاہم اس بات کا ادراک ہونا کہ سکرینز کو کس طرح مفید انداز میں استعمال کیا جا سکتا ہے اور انھیں استعمال کرنا کب ترک کرنا چاہیے کے مثبت اثرات ہو سکتے ہیں۔

بیرونی اثرات

آج کل ہمیں یہ فکر نہیں ہوتی کہ بچوں کی سوچ پر بیرونی ذرائع کس طرح اثر انداز ہو سکتے ہیں۔ مشہور فلسفی پلاٹو (افلاطون) کو بھی یہ اندیشہ تھا کہ شاعری اور ڈرامہ نوجوان ذہنوں پر اثر انداز ہو سکتے ہیں۔ اسی نوعیت کی پریشانی ان والدین کو بھی ہوئی جن کے گھروں میں شروعات میں ٹیلی ویژن نے ایک لازمی حیثیت حاصل کی تھی۔ والدین اس دوران بھی بچوں کو ٹیلی ویژن کا عادی ہونے اور اس سے اپنی آنکھوں کے متاثر ہونے کے حوالے سے خبردار کرتے تھے۔

شاید یہی وجہ تھی کہ رولڈ ڈاہل نے سنہ 1964 میں اپنی کتاب چارلی اینڈ دی چاکلیٹ فیکٹری میں لکھا تھا:

'خدارا، خدارا، ہم ہاتھ جوڑتے ہیں
جاؤ اپنے ٹی وی پھینک آؤ
اور ان کی جگہ آپ اسی دیوار پر
خوبصورت کتابوں کی الماری نصب کر لو'

جہاں ہمیں یہ معلوم ہے کہ کتب بینی سے ہماری علمی قابلیتوں کا تعلق ہے وہیں ہمیں یہ بھی ملحوظ خاطر رکھنا ہے کہ وہ ایک ایسی دنیا میں پروان چڑھ رہے ہیں جہاں ہر جانب سکرینز موجود ہیں۔ تاہم ان کی جانب سے سکرینز استعمال کرنے کا دورانیہ ایک افسردہ خاکہ کھینچتا ہے۔

اندازوں کے مطابق بچے جن کی عمر دو سال سے کم ہیو دن میں تین گھنٹے سکرینز کے سامنے گزارتے ہیں۔ یہ دورانیہ پچھلے 20 سالوں میں دگنا ہوا ہے۔ ایک اور تحقیق کے مطابق سکول جانے کی عمروں والے بچوں کے لیے 49 فیصد کا دو گھنٹے سے زیادہ دورانیہ رہا اور 16 فیصد کا چار گھنٹے سے زیادہ۔

سکرین ٹائم میں اضافے سے جسمانی ورزش میں کمی آتی ہے، وزن بڑھتا ہے اور خاندان کے ساتھ اکھٹا کھانا کھانے کے کم مواقع ملتے ہیں۔ اس کے باعث بچوں کو بڑی عمر میں نیند کی کمی جیسے مسائل بھی درپیش ہوتے ہیں۔ تحقیق کے مطابق وہ بچے جن کے کمرے میں ٹی وی موجود ہے وہ ہر روز 31 منٹ کم سوتے ہیں۔

پہلی نظر میں یہ سب بہت چونکا دینے والا لگتا ہے تاہم ٹی وی پر لگنے والے تمام پروگرام ہی بچوں پر منفی اثرات نہیں ڈالتے ہیں اور چند معلوماتی پروگرامز دیکھنا بچوں کے لیے مفید ثابت ہوتا ہے۔ تاہم یہ صرف ان بچوں کے لیے مفید ہے جن کے عمر دو سال سے زیادہ ہے، دو سال سے کم عمر کے بچوں کے لیے عام طور پر ایسا کچھ بھی مفید نہیں ہے۔

خوش قسمتی سے چند بہترین کام کرنے والے پروڈیوسرز نے ٹی وی پروگرامنگ میں معلوماتی پروگرام بھی شامل کر دیے ہیں، ٹی وی شو

'سیسمی سٹریٹ' اس کی ایک مثال ہے۔ تحقیق کے مطابق ٹی وی پر چلنے والے معلوماتی مواد کی مدد سے تین سے پانچ برس کے بچوں کے رویوں، خواندگی اور علمی مہارت بہتر بنانے میں مدد ملتی ہے۔

امریکی ریاست فلاڈیلفیا کی ٹیمپل یونیورسٹی میں نوزائیدہ بچوں کی زبان کی لیبارٹری کی کیتھی ہیرش پاسیک کا کہنا ہے کہ 'اگر یہ معلوماتی پروگرامز ہیں اور انھیں ٹی وی کے لیے ڈیزائن کیا گیا ہے تو ان کے بچوں پر منفی اثرات نہیں ہو سکتے ہیں۔ بلکہ اس کے باعث غریب بچوں کی بھی مدد کی جا سکتی ہے۔ تاہم اگر آپ رات کا خبرنامہ دیکھ رہے ہیں یا کوئی پرتشدد پروگرامز دیکھ رہے ہیں جو ہمارے ٹیلی ویژنز پر ہر وقت ہوتے ہیں تو یہ بچوں کے لیے بہت برا ہے۔

یہی سب دوسرے میڈیا کے حوالے سے بھی سچ ہے۔ جب آپ سکرین پر اور سکرین آپ پر اثر انداز ہو رہی ہو، جیسے ویڈیو کالز کے دوران، دور پرے سے کہانیاں سنانا یا ایسے شوز دیکھنا جن کے دوران ہم اپنے بچوں کے ساتھ بات چیت کر رہے ہوں ہمارے لیے انتہائی مفید ثابت ہو سکتے ہیں کیونکہ یہ انٹرایکٹو ہوتے ہیں۔

مسئلہ یہ ہے کہ اکثر اوقات بچے سکرینز کا استعمال اس طرح نہیں کرتے اور اس کے پیچھے بھی کافی اہم وجوہات موجود ہیں۔ والدین سنہ 2020 میں انوکھی پریشانیوں سے دوچار ہیں جس میں ان کا کام اور ان کی گھریلو زندگی کی حدود تقریباً ختم ہو گئی ہیں۔

بچے اکثر غیر فعال انداز میں میڈیا کا مواد غر فعال انداز میں دیکھتے یا سنتے ہیں اور یہ ان کے لیے نقصان دہ ہو سکتا ہے۔ ایک تحقیق کے مطابق بچے سامنے بیٹھے شخص سے یا کسی ویڈیو کال کے دوران ایک لفظ بہتر طریقے سے سیکھ سکتے ہیں تاہم وہی لفظ اگر ایک سکرین پر یکطرفہ انداز میں کہا جائے گا تو شاید وہ اسے نہ سیکھ سکیں۔

دو سال سے سے زیادہ عمر کے بچوں کے دماغ بہتر انداز میں نشوونما پا رہے ہوتے ہیں اور ان کے اپنے والدین اور خیال رکھنے والوں سے ہونے والی گفتگو انتہائی اہم ہوتی ہے۔ 15 ماہ کے بچے اپنی ٹیبلیٹس کے ذریعے نئے الفاظ سیکھ ضرور سکتے ہیں لیکن انھیں یہ علم حقیقی زندگی میں استعمال کرنے میں مشکل پیش آ سکتی ہے۔

تحقیق سے پتا چلتا ہے کہ ٹیلی ویژن کے استعمال کا تعلق تخلیقی سوچ میں کمی سے بھی ہے۔ اسی تناظر میں ایک حالیہ تحقیق سے پتا چلتا ہے کہ سکرین کے سامنے گزارا گیا وقت سکول جانے والے بچوں کی 'دماغی منظر کشی کی صلاحیتوں' میں کمی لاتا ہے۔

دماغی منظر کشی اس بات کی جانب اشارہ ہے کہ ہم دنیا میں لوگوں، جگہوں اور واقعات کے بارے میں کیسے سوچتے ہیں۔ یہ دنیا بھر میں انسانوں کی ایک عادت ہے جس کے ذریعے موقع پر غیر موجودگی کے باوجود وہ دنیا میں ہونے واقعات کی دماغی منظر کشی کرتے ہیں۔

اس کے ذریعے آپ صرف الفاظ پڑھ کر ہی اس جگہ موجود ہو سکتے ہیں۔ جرمنی میں یونیورسٹی آف ریگنز برگ میں زبان کی تشکیل کی ماہر اور یہ تحقیق لکھنے والوں میں سے ایک سیباسٹیئن سگیٹ کا کہنا تھا کہ 'جب ہم ایک کام انجام دیتے ہیں تو ہمارے دماغ میں ایک عصبی ڈھانچہ بن جاتا ہے۔ اس کے ذریعے ہم خیال ہی میں عمل کر لیتے ہیں حالانکہ ہم جسمانی طور پر وہاں موجود نہ بھی ہوں۔

اس تحقیق کے دوران تین سے نو برس کی عمر کے 266 بچوں کو زیرِ نگرانی رکھا گیا اور انھیں ہر 10 ماہ کے دوران دو دماغی منظر کشی کے ٹیسٹ دے کر آزمایا گیا۔ اس دوران بچوں سے اس طرح کے سوال پوچھے گئے کہ کیا زیادہ چمکدار ہے، باجا یا وایلن؟ کیا چیز زیادہ نوکیلی ہے ناخن یا نتھی کرنے والی سوئی؟

ان سوالات کے باعث بچوں کو دماغی منظر کشی کرنے میں بھی مدد ملی جیسے انھیں یہ معلوم ہوا کہ ایک گول پتھر سوئی سے زیادہ ملائم ہوتا ہے۔ یہ بات تجربے کے ذریعے زیادہ بہتر انداز میں پتا چلتی ہے نہ کہ پڑھانے سے۔ اس سوال کا فوری جواب دینے کے لیے 'دماغی مناظر' کا اشیا سے موازنہ کرنا ضروری ہے۔

تحقیقاتی ٹیم کو تحقیق کے ایک برس کے دوران یہ معلوم ہوا کہ سکرین کے سامنے گزارا گیا وقت چاہے فعال ہو جیسے گیمنگ یا غیر فعال جیسے ٹیلی ویژن دیکھنے کے باعث کم دماغی منظر کشی عمل میں آتی ہے۔

آپ کچھ دیر کے لیے اپنی آنکھیں بند کریں اور سوچیں کے آپ ایک سوئمنگ پول میں ہیں۔ یہ انتہائی آسان ہے سوچنا کہ پانی جب آپ کے جسم سے ٹکراتا ہے تو آپ کو کیا محسوس ہوتا ہے، اس کی خوشبو کیسی ہوتی ہے اور زمین پر پھسلن کتنی ہوتی ہے۔ یہ احساسات ماضی کے تجربات سے ہی آتے ہیں۔ اگر صرف کسی کو سکرین پر تیرتے دیکھیں گے تو ہمیں یہ لمحہ اتنی آسانی سے یاد نہیں آئے گا۔

اس کی وجہ یہ ہے کہ سکرین ہمارا کام کر دیتی ہے۔ سکرینز ہماری آنکھوں کے سامنے اور کانوں تک معلومات لے آتی ہیں لیکن ہماری دیگر حواس پر اثر انداز نہیں ہوتی جیسے محسوس کرنے، چھونے یا توازن برقرار رکھنے کی حس۔

سگیٹ کا کہنا ہے کہ 'پہلے دس سالوں میں اور آغاز میں بھی ہمیں یہ معلوم ہے کہ بچوں میں اپنے حواس سے متعلق معلومات ابھی بہتر ہو رہی ہوتی ہیں۔ یہ وہ وقت ہوتا ہے کہ آپ اپنے حواس کی قابلیت کو بہتر بناتے ہیں۔'

تو بطور والدین ایک ایسے دور میں جب سکرینز ہماری زندگیوں کا ایک اہم حصہ بن گئیں ہیں آپ کیا کر سکتے ہیں؟

اچھی خبر یہ ہے کہ والدین کے لیے اب یہ انتہائی آسان ہے کہ وہ بچوں کی دماغی منظر کشی کی صلاحیت کو بہتر بنانے کے ساتھ ساتھ ان کا سکرین ٹائم بھی کم کریں۔ سگیٹ کیمطابق صرف آپ کو کرنا یہ ہے کہ انھیں کھیلنے کی اجازت دینی ہے کیونکہ تخلیقی کھیلوں کی بنیاد ہی دماغی منظر کشی ہے۔ جتنا زیادہ بچوں کو کھیلوں میں لگایا جائے گا، اتنا زیادہ ان کے خیالات میں پختگی آئے گی۔ یہ اس لیے بھی ضروری ہے کیونکہ بچے جتنا زیادہ وقت سکرینز کے سامنے گزار رہے ہیں اتنا ہی کم وقت باہر گزارتے ہیں۔

سگیٹ کا کہنا ہے کہ 'ظاہر ہے ہم سب ایک ایسی جدید دنیا میں رہتے ہیں جہاں سکرینز کا استعمال ناگزیر ہو گیا ہے۔ اس کا مطلب یہ نہیں ہے کہ آپ یہ کہیں کہ ضرور والدین میں کوئی مسئلہ ہے اور وہ بچوں کو وقت نہیں دے پاتے بلکہ شاید بچوں کی جبلت پر اعتماد کیا جائے تا کہ وہ حقیقی دنیا کے ان متنوع تجربات میں شریک ہو سکیں۔'

بہت سارے والدین کے لیے شاید یہ آسان بھی نہ ہو۔ اسی وجہ سے یہ سمجھنا بہت اہم ہے کہ 'سکرین ٹائم' میں بہت ساری ڈیوائسز کا مجموعہ ہے۔ موبائلز، ٹیبلیٹس، ٹی وی اور گیمنگ سب ہی سکرین ٹائم کے لیبل تلے آتے ہیں۔ ٹیبلٹس ایک دہائی سے بھی زیادہ عرصے سے موجود ہیں لیکن ان کی وجہ سے کلاس روم اور گھر بیٹھے تعلیم جیسی سہولیات دی جا سکتی ہیں۔

ہیرش پاسیک کا کہنا ہے کہ یہی وجہ ہے کہ ہمیں بچوں کے لیے مفید، فعال اور معلوماتی سکرین کے استعمال کو یقینی بنانا ہے کیونکہ 'اسے آسانی سے اپنایا جا سکتا ہے اور یہ فعال بھی ہے دوسری جانب زیادہ تر سکرین ٹائم کا مطلب بیٹھ کر سننا اور وقت ضائع کرنا ہے۔'

مثال کے طور پر لاک ڈاؤن کے دوران ہیرش پاسیک اور ان کے دوستوں نے مل کر یہ سمجھنے کی کوشش کی کہ سکول جانے سے قبل بچے ورچوئل کہانیاں سننے پر کیسا ردِعمل دیتے ہیں۔ یہ ان کے الفاظ سیکھنے کے پچھلے کاموں جیسا ہی ہے۔ ان کی ٹیم نے جانا کہ بچوں کو ورچوئل کہانیوں سے مدد مل سکتی ہے جو انھیں ویڈیو کالز پر بتائی جاتی ہیں اور انھیں ان کی اتنی ہی سمجھ آتی ہے جتنی آمنے سامنے کہانی سنانے سے آتی ہے۔ وہ ریکارڈڈ ویڈیوز کے مقابلے میں لائیو ویڈیوز پر زیادہ بہتر ردِعمل دیتے ہیں۔

اس سے معلوم ہوتا ہے کہ اگر سکرینز کو انٹرایکٹو انداز میں استعمال کیا جائے جو سیکھنے کے لحاظ سے انتہائی اہم ہیں تو یہ واقعی مفید ہو سکتی ہیں۔ حالانکہ لائیو ویڈیو ریکارڈڈ سے بہتر تھیں لیکن چار سال کے بچے ریکارڈڈ ویڈیو سے بھی سیکھ سکتے ہیں بس وہ بہتر ردِعمل نہیں دیتے۔

ہرش پاسیک کا کہنا ہے کہ بحث صرف اس بارے میں نہیں ہونی چاہیے کہ کیا سکرینز کے اثرات منفی ہیں یا مثبت بلکہ ہم کچھ قسم کی سکرینز کو بطور آلات بھی استعمال کر سکتے ہیں۔

'ہمیں ایسی سکرینز بنانی ہوں گی جو سماجی گفتگو کا آغاز کرنے کے لیے معاونت کریں نہ کہ انسانوں کی جگہ لے لیں۔'

تاہم یہ سمجھنا بھی ضروری ہے کہ اس کی زیادتی چاہے وہ معلوماتی مواد کی ہی کیوں نہ ہو، بچوں کی حقیقی دنیا کی منظر کشی کرنے کی صلاحیت پر اثر انداز ہو سکتی ہے۔

سورس : بی بی سی اردو

विधानसभा चुनाव तैयारियों की समीक्षा को लेकर बैठक आयोजित

निशा देवी
चंबा . बाख़बर कनेक्ट

विधानसभा चुनाव 2022 के तहत ज़िला स्तर पर विभिन्न प्रबंध व्यवस्थाओं को समयबद्ध तौर पर सुनिश्चित बनाने को लेकर उपायुक्त एवं ज़िला निर्वाचन अधिकारी डीसी राणा की अध्यक्षता में आज राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र के वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग कक्ष में निर्वाचन अधिकारियों, सहायक निर्वाचन अधिकारियों और विभिन्न नोडल अधिकारियों के साथ बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में पारदर्शी - निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण मतदान व्यवस्था सुनिश्चित बनाने को लेकर संबंधित विभिन्न विषयों पर समीक्षा के दौरान डीसी राणा ने

निर्वाचन अधिकारियों से सुविधा ऐप में आवश्यक जानकारियों को तय सीमा के भीतर अपलोड करने को कहा।

उन्होंने कहा कि यह भी सुनिश्चित किया जाए कि उम्मीदवारों द्वारा नामांकन प्रक्रिया के दौरान भारतीय चुनाव आयोग द्वारा निर्धारित सभी दिशा-निर्देशों के तहत व्यवस्था उपलब्ध हो। उन्होंने परिवहन व्यवस्था के लिए रूट प्लान सहित बसों की संख्या सूची उपलब्ध करवाने को भी कहा। उन्होंने कहा कि आंगनबाड़ी केंद्र भवनों में स्थापित मतदान केंद्रों में छोटे बच्चों की सुविधा के लिए मतदान वाले दिन खेलने की व्यवस्था भी सुनिश्चित बनाई जाए।

जिला के पांचों विधानसभा क्षेत्रों में 398080 मतदाता पंजीकृत : डीसी राणा

निशा देवी
चंबा . बाख़बर कनेक्ट

उपायुक्त एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डीसी राणा ने बताया कि जिला के पांचों विधानसभा क्षेत्रों में 398080 मतदाता पंजीकृत हैं। उन्होंने बताया कि ज़िला में 199698 पुरुष मतदाता और 194965 महिला मतदाता व थर्ड जेंडर के तौर पर 2 मतदाता पंजीकृत हैं। इसी तरह सेवा मतदाताओं की संख्या 3415 है।

डीसी राणा ने बताया कि सभी पांचों विधानसभा क्षेत्रों में 43 शतायु मतदाता हैं। जिसमें 90 से 99 वर्ष आयु के 943 मतदाता जबकि 80 से 89 आयु के 5821 पंजीकृत मतदाता है। उन्होंने बताया कि विधानसभा क्षेत्र चुराह के अंतर्गत कुल 78520 मतदाताओं में से 39613 पुरुष मतदाता जबकि 38447 महिला मतदाताओं सहित 460 सेवा मतदाताओं में 2 महिलाएं भी शामिल हैं।

इसी तरह विधानसभा क्षेत्र भरमौर के अंतर्गत कुल 78746 मतदाता हैं । इनमें पुरुष मतदाताओं की संख्या 40334 और 37995 महिला मतदाता है। भरमौर विधानसभा क्षेत्र में 417 सेवा मतदाताओं में 2 महिलाएं हैं। चंबा विधानसभा क्षेत्र के तहत मतदाताओं से संबंधित जानकारी देते हुए डीसी राणा ने बताया कि कुल 84165 मतदाताओं में 42028 पुरुष मतदाता व 41728 महिला मतदाता और 409 सेवा मतदाताओं में 4 महिला मतदाता शामिल हैं।

उन्होंने बताया कि विधानसभा क्षेत्र डलहौजी के तहत कुल 75267 मतदाताओं में पुरुष 37841 और महिला मतदाताओं की संख्या 36882 है। इनमें 543 सेवा मतदाताओं में 10 महिलाएं शामिल हैं। भाटियात विधानसभा क्षेत्र के तहत कुल 81382 पंजीकृत मतदाता हैं। इनमें पुरुष 39882 जबकि 39913 महिला मतदाता हैं। थर्ड जेंडर के तौर पर एक मतदाता पंजीकृत है।

इसके साथ ज़िला में सबसे ज्यादा सेवा मतदाता भी भाटियात विधानसभा क्षेत्र में पंजीकृत हैं। यहां 1586 सेवा मतदाताओं में 27 महिलाएं हैं।

उपायुक्त एवं जिला निर्वाचन अधिकारी ने यह भी बताया कि ज़िला में 80 वर्ष से 100 वर्ष की आयु से अधिक के 6807 वयोवृद्ध मतदाता हैं।

चुराह विधानसभा क्षेत्र के तहत 1070 वृद्ध मतदाताओं में 80 से 89 आयु के 932 व 90 से 99 वर्ष आयु के 135 और 100 वर्ष की आयु से अधिक के 3 वयोवृद्ध मतदाता है ।

भरमौर विधानसभा क्षेत्र में 1255 वृद्ध मतदाताओं में 80 से 89 आयु के 1060 व 90 से 99 वर्ष आयु के 188 और 100 वर्ष की आयु से अधिक के 7 वयोवृद्ध मतदाता है।

इसी तरह चंबा विधानसभा क्षेत्र में 1584 वृद्ध मतदाताओं में 80 से 89 आयु के 1358 व 90 से 99 वर्ष आयु के 210 और 100 वर्ष की आयु से अधिक के 16 वयोवृद्ध मतदाता है।

डलहौजी विधानसभा क्षेत्र से संबंधित जानकारी देते हुए डीसी राणा ने बताया कि 1138 वृद्ध मतदाताओं में 80 से 89 आयु के 979 व 90 से 99 वर्ष आयु के 155 और 100 वर्ष की आयु से अधिक के 4 वयोवृद्ध मतदाता है।

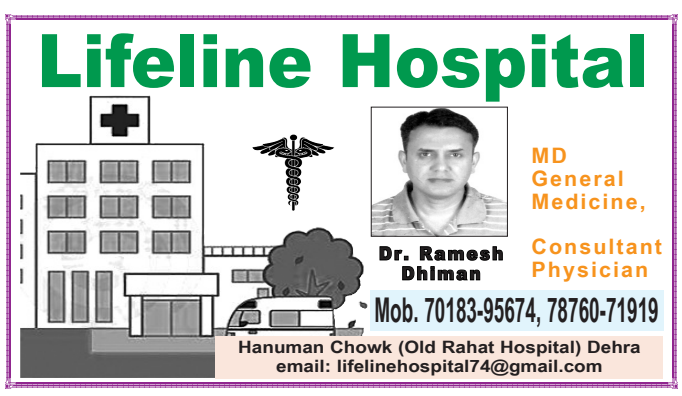

उपन्यास 'शहर दर शहर' का लोकार्पण एवं चर्चा

देवेन्द्र कश्यप
शिमला . बाख़बर कनेक्ट

हिन्दी के जाने-माने वरिष्ठ साहित्यकार राजेन्द्र राजन के नवीनतम उपन्यास शहर दर शहर का लोकार्पण गेयटी थियेटर में हुआ। पुस्तक का विमोचन सुप्रसिद्ध लेखक व रंगकर्मी श्रीनिवास जोशी ने किया। कार्यक्रम का आयोजन कीकली चैरिटेबल ट्रस्ट व शिमला वॉक्स संस्थाओं के सांझे प्रयास से किया गया। पुस्तक पर चर्चा में भाग लेते हुए डॉ. हेमराज कौशिक, आत्मा रंजन, सूरज प्रकाश, जितेन्द्र अवस्थी व विजय उपाध्याय ने आलेख व टिप्पणियां प्रस्तुत कीं। हेमराज कौशिक ने कहा कि शहर दर शहर एक संस्मरणात्मक उपन्यास है जिसमें लेखक की व्यक्तिगत संघर्ष गाथा का निरूपण हुआ है। आत्मारंजन ने इसे पठनीय व मार्मिक रचना बताया तो श्रीनिवास जोशी ने कहा कि शहर दर शहर में भाषा की रवानगी है और बेरोजगारी के दंश से जूझ रहे युवा की जिजीविषा का जीवंत दस्तावेज है।

लेखक ने अपनी संघर्ष गाथा के दौरान अनेक खट्टे-मीटे अनुभवों के आधार पर हिन्दी साहित्य की ऐसी रचना दी है जो एक व्यक्ति की पीढ़ा न होकर समस्त समाज के दु:ख में बदल जाती है। लेखक राजेन्द्र राजन ने इस मौके पर उपन्यास के एक रोचक अंश का पाठ किया जिसका सार यह था कि छपास व स्वयं को लेखक के रूप में स्थापित करने के लिये न कैरियर की बुलंदी को हासिल करने के वास्ते किस प्रकार भ्रष्ट लोगों व व्यवस्था से टकराकर शोषण का शिकार होना पड़ता है। इस अवसर पर काव्य गोष्ठी का भी आयोजन किया गया जिसमें करीब 30 युवा व वरिष्ठ कवियों ने काव्य पाठ किया। कीकली की अध्यक्षा वन्दना भागड़ा और शिमला वॉक्स के संचालक सुमित राज वारीष्ठने सभी लेखकों का अभिवादन किया व गोष्ठी में भाग लेने के लिये उनका धन्यवाद ज्ञापित किया। गोष्ठी का सफल मंच संचालन राधा सिंह ने किया।

बिना प्रमाणीकरण कोई भी विज्ञापन केबल पर चलाने पर होगी कड़ी कार्रवाई : डीसी

ललित कश्यप
ऊना . बाख़बर कनेक्ट

विधानसभा निर्वाचन-2022 से संबंधित विज्ञापनों व संदेशों के प्रमाणीकरण के लिए जिला शिमला में मीडिया प्रमाणीकरण एवं निगरानी समिति का गठन किया गया है।

यह जानकारी देते हुए समिति के अध्यक्ष एवं उपायुक्त शिमला आदित्य नेगी ने बताया कि बिना प्रमाणीकरण कोई भी चुनावी विज्ञापन अथवा संदेश प्रसारित करना सुप्रीम कोर्ट के आदेशों की अवेहलना है तथा उल्लघंनकर्ता के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

उन्होंने जिला शिमला के सभी केबल ऑपरेटर्स को निर्देश दिए कि सिर्फ मीडिया प्रमाणीकरण एवं निगरानी समिति (एमसीएमसी) द्वारा प्रमाणिक विज्ञापनों व संदेशों का ही प्रसारण करें। विज्ञापन तथा संदेशों के प्रमाणीकरण के लिए जिला लोक संपर्क कार्यालय शिमला में संपर्क किया जा सकता है।

उपतहसील बलदेयां में नायब तहसीलदार सोहन लाल ने संभाला अपना कार्यभार

शिमला : उपतहसील बलदेयां में नायब तहसीलदार सोहन लाल ने अपना कार्यभार संभाला। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में एसडीएम निशांत ठाकुर ने शिरकत की। इस मौके पर ग्राम पंचायत बलदेयां की प्रधान गीता देवी ने मुख्य अतिथि और अन्य अतिथियों का स्वागत करते हुए जनता को उपतहसील बनने की बधाई दी। इस दौरान पूर्व मंत्री रूपदास कश्यप, विकास खंड अधिकारी मोहित रतन, ज्योति सेन, रूपा शर्मा, मंडल अध्यक्ष, जितेंद्र भोटका, अंजना शर्मा, प्रेम ठाकुर, पृथ्वी विक्रम सेन, केशव चौहान, उपमहापौर राकेश शर्मा और 6 पंचायतों के जनप्रतिनिधि, राजस्व विभाग के कर्मचारी और 6 पंचायतों की जनता भी उपस्थित रही।

प्रकाश बादल को विशिष्ट फोटोग्राफी के लिए किया जाएगा सम्मानित

अजय कश्यप
शिमला . बाख़बर कनेक्ट

हिमाचल प्रदेश के वाईल्ड लाईफ फोटोग्राफर प्रकाश बादल को देश के चुनिन्दा फोटोग्राफरों के तौर पर उनकी विशिष्ट फोटोग्राफी के लिए सम्मानित किया जाएगा। इसके साथ उनके द्वारा खींची गई तस्वीरों को कोलकाता में 11 नवम्बर से 13 नवम्बर में आयोजित किये जा रहे फोटोफेस्ट में प्रदर्शित किया जाएगा। इसके की तस्वीरों को विश्व भर के फोटोग्राफरों में से चुना जाना प्रदेश के लिए गर्व का विषय है। कोलकाता के इस फोटोफेस्ट में विश्व भर के अनेक फोटोग्राफरों की तस्वीरें शुमार होंगी। इससे पहले भी प्रकाश की तस्वीरों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रदर्शित किया जा चुका है और उनके द्वारा खींची गयी

तस्वीरों को अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भी पहचान मिली है। प्रकाश बादल को नवम्बर में कोलकाता में होने जा रही प्रदर्शिनी और सम्मान समारोह में शामिल होने के लिए आधिकारिक तौर पर आमंत्रण प्राप्त हुआ है। प्रकाश बादल देश भर के सैंकड़ों पक्षियों को कैद करने वाले वाईल्ड लाईफ फोटोग्राफरों की सूची में शुमार हैं।

प्रकाश द्वारा खींची गयी वाईल्ड लाईफ की तस्वीरें विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना चुकी हैं। इससे पहले ग्रेट ब्रिटेन के विभिन्न मीडिया में उनकी एक तस्वीर ने लाखों लोगों को आकर्षित किया है। नेशनल जियोग्राफिक द्वारा भी प्रकाश की तस्वीरों को फीचर किया जा चुका है। उत्तराखंड वन विभाग द्वारा भी उन्हें विशेष सम्मान प्राप्त हुआ है। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल द्वारा प्रकाश की तस्वीरों की सराहना की गयी है और हिमाचल के तत्कालीन राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने उनकी तस्वीरों की सराहना करते हुए उन्हें विशेष रूप से पत्र लिखा है। वर्ल्ड फोटोग्राफी क्लब द्वारा विश्व के सौ फोटोग्राफरों की एक काफी टेबल बुक में भी उनकी तस्वीर को स्थान मिल चुका है।

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक **हेमराज हरनोट** द्वारा वायलट हिल, जाखू, शिमला-1 से प्रकाशित एवं **दुर्गा पेपर कन्वर्टरज़**, कांशी भवन, तारादेवी, शिमला-10, जिला शिमला (हि.प्र.) से मुद्रित। सम्पादक : **हेमराज हरनोट**।
बाख़बर कनेक्ट से सम्बन्धित सभी मामलों का निपटारा न्यायिक अधिकार क्षेत्र शिमला में ही होगा। फोन नं. 094185-88654, email: bakhabarconnect@gmail.com, Post Box No. 86, Shimla-1, H.P.